CLASS : 10th (Secondary) **4264/4214**

Series : Sec. M/2019

Total No. of Printed Pages : **8**

MARKING INSTRUCTIONS AND MODEL ANSWERS

पशुपालन

ANIMAL HUSBANDRY

(Academic/Open)

(Only for Fresh/Re-appear Candidates)

उप-परीक्षक मूल्यांकन निर्देशों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करके उत्तर- पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें। यदि परीक्षार्थी ने प्रश्न पूर्ण व सही हल किया है तो उसके पूर्ण अंक दें।

General Instructions :

(i) *Examiners are advised to go through the general as well as specific instructions before taking up evaluation of the answer-books.*

(ii) *Instructions given in the marking scheme are to be followed strictly so that there may be uniformity in evaluation.*

(iii) *Mistakes in the answers are to be underlined or encircled.*

(iv) *Examiners need not hesitate in awarding full marks to the examinee if the answer/is/are absolutely correct.*

(v) *Examiners are requested to ensure that every answer is seriously and honestly gone*

through before it is awarded mark/s. It will ensure the authenticity as their evaluation and enhance the reputation of the Institution.

(vi) A question having parts is to be evaluated and awarded partwise.

(vii) If an examinee writes an acceptable answer which is not given in the marking scheme, he or she may be awarded marks only after consultation with the head-examiner.

(viii) If an examinee attempts an extra question, that answer deserving higher award should be retained and the other scored out.

(ix) Word limit wherever prescribed, if violated upto 10%. On both sides, may be ignored. If the violation exceeds 10%, 1 mark may be deducted.

(x) Head-examiners will approve the standard of marking of the examiners under them only after ensuring the non-violation of the instructions given in the marking scheme.

(xi) Head-examiners and examiners are once again requested and advised to ensure the authenticity of their evaluation by going through the answers seriously, sincerely and honestly. The advice, if not headed to, will bring a bad name to them and the Institution.

महत्त्वपूर्ण निर्देश :

(i) अंक-योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। अंक-योजना में दिए गए उत्तर-बिन्दु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं। यदि परीक्षार्थी ने इनसे भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दिए हैं, तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएँ।

(ii) शुद्ध, सार्थक एवं सटीक उत्तरों को यथायोग्य अधिमान दिए जाएँ।

(iii) परीक्षार्थी द्वारा अपेक्षा के अनुरूप सही उत्तर लिखने पर उसे पूर्णांक दिए जाएँ।

(iv) वर्तनीगत अशुद्धियों एवं विषयांतर की स्थिति में अधिक अंक देकर प्रोत्साहित न करें।

(v) भाषा-क्षमता एवं अभिव्यक्ति-कौशल पर ध्यान दिया जाए।

(vi) मुख्य-परीक्षकों/उप-परीक्षकों को उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करने के लिए केवल Marking Instructions/ Guidelines दी जा रही है, यदि मूल्यांकन निर्देश में किसी प्रकार की त्रुटि हो, प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, मूल्यांकन निर्देश में दिए गए उत्तर से अलग कोई और भी उत्तर सही हो, तो परीक्षक, मुख्य-परीक्षक से विचार-विमर्श करके उस प्रश्न का मूल्यांकन अपने विवेक अनुसार करें।

निर्देश : (i) ***सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।***

(ii) प्रत्येक प्रश्न के अंक प्रश्न के साथ दिये गये हैं।

खण्ड – अ

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर प्रश्न में से ही लिखें। प्रत्येक प्रश्न का ***एक*** अंक है।

1. C 1

2. D 1

3. D 1

4. B 1

5. 6.8 1

6. Sodium Floride (सोडियम फ्लोराइड) 1

7. 5 Years 1

8. 162 °F 1

9. To work collectively (इक्ट्ठे होकर काम करना) 1

खण्ड – ब

10. (i) रोग से बचाने के लिए मुर्गियों को 6-8 सप्ताह के अन्दर अन्दर कुक्कुट चेचक का टीका लगा देना चाहिए 6 महीने बाद यह फिर से दोहराया जाता है।

(ii) 24 हिस्से जल में एक हिस्सा बोरिक एसिड घोलकर मुर्गियों की आँखें धोनी चाहिए। लाल दवाई से सभी दाना पानी वाले वर्तन साफ करते रहना चाहिए। पौष्टिक व नरम खुराक देनी चाहिए जिससे गले में और जख्म न हो। $1 \times 2 = 2$

11. पशु का आकार आयताकार रूपरेखा लिए हो जिसमें पेट तथा पीठ एक-दूसरे के समान्तर हो, पीठ में गढ़ढा न हो चारों पैर समान रूप से जचे हो, गर्दन चौड़ी तथा सिर से नीचे की ओर धीरे-धीरे मोटी होती जाती है कमर पर हाथ रखकर पशु की चौड़ाई तथा मजबूती का ज्ञान होता है पूँछ को जड़ से पकड़कर पुट्ठों और कमर के मध्य एक झुकाव पशु की चर्बी जमने का सूचक है। छाती

की हड्डी पर जमी चर्बी देखकर उनके मांस का अन्दाजा लगाया जा सकता है। 2

12. (i) पक्षियों के शरीर पर BHC वाली राख मलनी चाहिए तथा उन्हे चीचड़ों से बचाव करने वाली डुग्गियों में बैठाना चाहिए। फिनायल का घोल छिडकना चाहिए।

(ii) मिट्टी तथा सरसों का तेल मिलाकर पक्षियों पर मलने से लाभ होता है। $1 \times 2 = 2$

13. (i) आहार इस प्रकार का हो जो आसानी से पचाया जा सके।

(ii) पशु का चारा हरा और अधिक रसीला होना चाहिए। दाने, खली आदि की मात्रा पशु के डील-डौल, हरे चारे की सुलभ मात्रा और क्वालिटी के अनुसार निर्धारित की जाती है। $1 \times 2 = 2$

14. सांडों से सप्ताह में केवल दो बार या अधिकतम तीन बार एक दिन छोड़कर वीर्य प्राप्त करना चाहिए। कम आयु तथा छोटी आकार के नस्लों से सप्ताह में केवल दो बार ही वीर्य प्राप्त करते हैं। बडी आयु के सांडों से सप्ताह में तीन बार वीर्य प्राप्त करने से उनके स्वास्थ्य पर कोई बुरा असर नहीं पड़ता। 2

15. (i) गिरा-गिरा स्वास्थ्य, ज्यादा भूख और प्रायः कृमि अण्डों वाली पतली बीटें।

(ii) मुर्गियों का अण्डा उत्पादन कम हो जाता है।

(iii) भार में कमी होना।

(iv) आंत की खराबी से मर जाते हैं। $\frac{1}{2} \times 4 = 2$

16. (i) बी० सी० जी० का टीका लगाना होता है।

(ii) स्ट्रैप्टोमाइसीन दे सकते हैं । इसकी चिकित्सा बहुत मंहगी पड़ती है, रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग कर देना चाहिए। $1 \times 2 = 2$

17. (i) रानीखेत की रोकथाम के लिए चूजों को पहले दिन एफ वन का टीका लगा देना चाहिए। दूसरा केवल रानीखेत का टीका 6 या 8 सप्ताह की आयु होते ही पंखों के नीचे लगा देना चाहिए।

(ii) कुक्कुटशालाओं को कीटाणुनाशकों से रोग रहित रखना चाहिए और उन्हें पूरी तरह साफ रखना चाहिए। रोगी पक्षियों को तत्काल अलगकर उन्हें नष्ट कर देना चाहिए।

$1 \times 2 = 2$

18. (i) पिंजरों के बनाने पर अधिक धन खर्च होता है ।

(ii) गर्मियों में मक्खियों तथा गर्मी का प्रकोप व अधिक मजदूरी की जरूरत होती है। चूजा पैदा करने के लिए अण्डा चाहिए तो पिंजरों में कृत्रिम गर्भाधान का सहारा लेना पड़ता है।

$1 \times 2 = 2$

खण्ड – स

19. (i) पशु को श्लेष्मा व रक्तयुक्त दस्त शुरू हो जाता है।

(ii) शरीर निर्बल हो जाता है।

(iii) पशु की भूख कम हो जाती है।

(iv) शरीर का भार कम हो जाता है । पशु की गुदा बाहर दिखने लगती है।

(v) पशु का जुगाली करना बन्द हो जाता है।

(vi) पशु को अधिक बेचैनी तथा अधिक प्यास लगती है।

$\frac{1}{2} \times 6 = 3$

20. (i) पशु में यह रोग होने पर पूरा समय होने से पहले ही 5-8 मास के पास गर्भपात हो जाता है।

(ii) कम दूध उत्पादन रह जाता है।

(iii) अधिकतर जैर का रूक जाना देखने में आता है योनि और गर्भाशय पर सूजन आ जाती है।

(iv) गर्भपात से पहले योनि स्त्राव शुरू हो जाता है।

(v) सांडों में अण्ड कोषों का सूजना। 3

21. रोकथाम –

(i) रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें।

(ii) प्रति छः माह पर मुँह खुर रोग वैक्सीन का टीका लगाना चाहिए।

जिस क्षेत्र में यह रोग फैला है वहाँ से पशुओं का आवागमन बन्द कर दें।

चिकित्सा : एन्टीसैप्टिक लोशन जैसे लाल दवाई या फिटकरी को पानी में घोलकर प्रयोग करना चाहिए तथा पैरों के लिए फिनायल घोल का प्रयोग करना चाहिए। 3

22. (i) इस विधि में गर्मी में आने वाली पशुओं की पहचान आवश्यक है।

(ii) उन्नत तकनीकों का प्रयोग नहीं करना।

(iii) इस विधि में प्रयुक्त होने वाली वस्तुएँ एवं यन्त्र मूल्यवान होते हैं जिन्हें एक भारतीय औसत श्रेणी का पशुपालक नहीं रख सकता।

(iv) इस विधि के प्रयोग के लिए इस विषय से सम्बन्धित प्रशिक्षित एवं योग्य अनुभवी व्यक्ति की आवश्यकता होती है।

(v) प्राकृतिक विधि की अपेक्षा अधिक समय की आवश्यकता पड़ती है।

(vi) प्रति पशु गर्भाधान इस विधि द्वारा मंहगा पड़ता है।

$\frac{1}{2} \times 6 = 3$

23. संकर प्रजनन के लाभ :

(i) इस प्रणाली से उत्पन्न पशु के दूध देने की क्षमता उसके पूर्वजों से अधिक होती है।

(ii) इस प्रणाली से प्राप्त पशुओं के शरीर वृद्धि बहुत तेजी से होती है । 14-15 महीने की आयु में गर्भधारण कर लेते है।

(iii) इन पशुओं का व्यात अन्तराल कम होता है। $1 \times 3 = 3$

24. सीमित मुख्य कार्य :

(i) सदस्यों के लिए ऋण की व्यवस्था करना, उर्वरक, बीज, कीटनाशक दवाओं, चारा उत्पादन के लिए सिंचाई सुविधाएँ,

(ii) दाना मिश्रण एवं प्रजनन तथा चिकित्सा सम्बन्धी सुविधाएँ उपलब्ध करवाना।

(iii) सदस्यों द्वारा उत्पादित दूध की बिक्री की व्यवस्था करना। $1 \times 3 = 3$

खण्ड – द

25. देखे पेज नं० **134-135** पशुविज्ञान (दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तक) 5

या

देखें पेज नं० **131-132** पशुविज्ञान (दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तक) 5

26. देखें पेज नं० **33-34** पशुविज्ञान (दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तक) 5

या

देखें पेज नं० **233** पशुविज्ञान (दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तक) 5

27. देखें पेज नं० **120-121** पशुविज्ञान (दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तक) 5